उपभोक्ता की बचत की धारणा का व्यावहारिक महत्त्व
(Practical importance of the concept of consume's surplus)

उपभोक्ता की बचत की धारणा का बहुत ही व्यावहारिक महत्त्व है। इसका प्रयोग निम्नलिखित क्षेत्रों मे किया जाता है —

1. एकाधिकारी मूल्य के निर्धारण मे (In determination of Monopoly Price) — एकाधिकारी को अपने मूल्य के निर्धारण मे उपभोक्ता की बचत की धारणा से सहायता मिलती है। यदि किसी वस्तु से उपभोक्ता की बचत कम मिलती है तो एकाधिकारी उसका मूल्य ऊँचा नही रखेगा क्योंकि मूल्य बढ़ने से माँग कम होगी तथा एकाधिकारी को अधिक लाभ नही होगा। दूसरी ओर, जिन वस्तुओ से उपभोक्ता की बचत अधिक प्राप्त होती है उनके मूल्य को बढ़ाकर एकाधिकारी अधिक लाभ कमा सकता है।

2. राजस्व के क्षेत्र मे (In the sphere of public Finance) — सरकार को कर (Tax) लगाने मे तथा उद्योगो को आर्थिक सहायता (Subsidies) देने मे उपभोक्ता की बचत की धारणा से सहायता मिलती है। उपभोक्ताओ को जिन वस्तुओ की खरीद से अधिक उपभोक्ता की बचत मिलती है उनपर सरकार अधिक कर लगा सकती है। लेकिन जिन वस्तुओ से उपभोक्ता की बचत कम प्राप्त होती है लेकिन करारोपण के कारण वस्तु का मूल्य बढ़ जाता है जिससे उपभोक्ता की माँग एवं उपभोक्ता की बचत मे कमी होती है। अतः कोई भी कर तभी उचित (Justified) कहा जायेगा जब सरकार को प्राप्त लाभ उपभोक्ता द्वारा खोये गये संतोष (loss of satisfaction) से अधिक होगा।

3. उपयोगिता - सम्बन्धी अर्थ तथा विनिमय - सम्बन्धी अर्थ के अन्तर को स्पष्ट करने मे (To clarify the distinction between value in use and value in exchange) :- उपभोक्ता की बचत की धारणा इस बात की ओर संकेत करती है कि वस्तुओ का मूल्य प्रायः उनकी उपयोगिता का सही सूचक नही होता। दूसरे शब्दो मे उपभोक्ता की बचत का सिद्धांत उपयोगिता सम्बन्धी अर्थ (value in use) तथा विनिमय - सम्बन्धी अर्थ (value - in - exchange) के अन्तर को स्पष्ट करता है। उदाहरण के लिए अखबार, नमक, दियासलाई आदि वस्तुओ का मूल्य अथवा विनिमय सम्बन्धी अर्थ तो कम होता है लेकिन इनका उपयोगिता सम्बन्धी अर्थ बहुत अधिक होता है। अतः इन वस्तुओ के खरीदने से हमे अधिक उपभोक्ता की बचत मिलती है।

Scanned with CamScanner

(4) अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार मे (International Trade) — अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार से प्राप्त लाभ को जानने के लिए भी उपभोक्ता की बचत की धारणा का सहारा लिया जा सकता है। हम प्रायः उन्ही वस्तुओ का आयात करते है जिनका मूल्य देश मे प्रचलित मूल्य से कम होता है। इस प्रकार आयात से हमे उपभोक्ता की बचत प्राप्त होती है। यह उपभोक्ता की बचत जितनी ही अधिक होगी, अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार हमारे लिए उतना ही अधिक लाभदायक होगा।

(5) दो स्थानो तथा समयो के बीच जीवन-स्तर की तुलना करने मे (In comparing the standard of living of two places and during two periods) :- दो स्थानो तथा समयो के बीच लोगो के जीवन-स्तर की तुलना करने मे भी उपभोक्ता की बचत की धारणा सहायक होती है। यदि एक ही रकम खर्च करने से एक जगह पर उपभोक्ता की बचत कम मिलती है तो निश्चय ही पहली जगह के निवासियो का जीवन-स्तर दूसरी जगह के निवासियो की तुलना मे बेहतर होगा। इसी प्रकार यदि भूतकाल की तुलना मे वर्तमान समय मे हमे उपभोक्ता की बचत अधिक मिल रही हो तो हमारे जीवन-स्तर मे पहले की अपेक्षा वृद्धि हुई है।

Scanned with CamScanner